परमात्म शक्ति को विश्व व्यापी बनाया

हमेशा कहती थीं, सिम्पल रहो, सैम्पल बनो

दादी जी का बाबा की मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) से बहुत प्यार व रिगार्ड था। वे सुबह क्लास में जाने से पहले मुरली को अच्छी तरह पढ़ती थीं। फिर शाम को चाय पीने के बाद मुरली पढ़ती थीं। रात्रि को, कितनी भी देर से वे कमरे में आएं पर मुरली पढ़े बिना सोती नहीं थीं। बाबा की मुरली से इतना जिगरी प्रेम था। कभी-कभी हम उनको कहते थे, दादी आप मन-मन में पढ़ रही हैं, हमें भी सुनाइए, हम भी सुनेंगे। तब दादी जी बहुत प्यार से पढ़कर सुनाती थीं, चाहे रात्रि के ग्यारह, साढ़े ग्यारह क्यों न बज जाएं।

दादी जी के अंदर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी। कमरे में दादी के दोनों तरफ बाबा के चित्र लगे हुए थे। उनका सारा ध्यान बाबा में ही रहा। दादी जी हमेशा कहती थीं, सिम्पल रहो, सैम्पल बनो। मर्यादा पुरुषोत्तम बाबा की बच्ची होने के नाते दादी स्वयं मर्यादा में रहती थीं और सबको यही सिखाती थीं। वे कहती थीं, न बहुत ऊपर, न बहुत नीचे, साधारण रहो। वे कहती थी की यह समय बहुत ही मुल्यवान है हमें उन्हें सफल करना चाहिए।

-ब्र.कु. मोहिनी,अध्यक्षा,ग्राम विकास प्रभाग।

सदा तत्पर थी दादी

दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं। दादी जी को सारे ब्राह्मण परिवार से बेहद प्यार था। जो सामने आता था, उसका मुस्कराकर स्वागत करती थीं। वे निद्राजीत और अथक सेवाधारी थीं। जब कभी हम कहते थे, दादी! अमुक व्यक्ति आपसे मिलने आया है तो बिस्तर से उठकर भी मिलने को तैयार रहती थीं। वे तपस्वीमूर्त थीं। रात्रि को दो बजे उठकर तपस्या करती थीं। अमृतवेले का योग नियमित करती थीं। उस समय उन्हें बाबा से बहुत प्रेरणाएं मिलती थीं जिन्हें वे सुनाती भी थीं। ओम शान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, शांतिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबन्धन दादी जी ने मुझे सिखाया। दादी जी खरीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी। - ब्र.कु. मुन्नी, कार्यक्रम निदेशिका।

हिम्मत से जीना सिखाया दादी ने

मेरा अलौकिक जन्म नौ वर्ष की आयु में हुआ, परन्तु इस जन्म को श्रेष्ठता प्रदान करने वाली आदरणीय दादी जी को मैं अपनी विशेष टीचर के रूप में देखती थी। उन्होंने मुझे हर प्रकार की ट्रेनिंग दी। एक अच्छी विद्यार्थी, एक अच्छी शिक्षिका, एक अच्छी प्रशासिका, एक अच्छी ट्रेनर के लक्षण क्या हैं, यह सब दादीजी में दिखाई देते थे। मैं उन्हें ऑब्ज़र्व किया करती थी। दादी जी का भी मेरे साथ बहुत प्यार था। दादीजी की एक विशेषता थी कि वे कभी भी किसी बात को असम्भव नहीं समझती थीं और ना ही दूसरों को समझने देती थीं। एक बार कलकत्ता में पहला-पहला बहुत बड़ा मेला था, दादी जी वहां मेले की तैयारी के लिए गई थीं। मेरा सौभाग्य था कि मैं भी दादी जी के साथ थी। यह बात सन् 1974 की है। मेले में प्रेस कॉन्फ्रेन्स रखी गई। उसका हैण्ड आउट बनाना था। दादीजी ने मुझे कहा कि आशा तुम लिखो। मैंने कहा, दादीजी मैंने आज दिन तक नहीं लिखा है। दादीजी सिखाने की भावना से गंभीर होकर बोलीं- कोई तो दिन होगा जो तुम पहली बार लिखोगी, तो समझो आज ही पहला दिन है और मैंने वो हैण्ड आउट हिन्दी और अंग्रेजी में तैयार किया और दूसरे दिन वह प्रकाशित भी हुआ, जिससे मुझे प्रसन्नता तो मिली पर साथ-साथ दादी जी ने वो बीज बो दिया कि हिम्मत रखोगे तो बाबा मदद करेगा।

-ब्र.कु.आशा,निदेशिका ओ.आर.सी. गुड़गांव।

उनके हर कर्म योगयुक्त था

दादीजी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनमें मैं-पन का सम्पूर्ण अभाव। हमने कभी भी उन्हें मैं शब्द उपयोग करते नहीं देखा। दादीजी के मुख्य प्रशासिका बनने से पहले भी मुम्बई में मुझे दादीजी के साथ रहने का अवसर मिला। उन्हें अपना विचार प्रकट करना भी होता था तो वे कहती थीं कि दादी का यह विचार है, दादी ऐसा करना चाहती है। हम सभी सामान्य रूप से यह कहते हैं कि मेरा यह विचार, मैं यह करना चाहती/चाहता हूँ, परन्तु दादीजी ने कभी मैं या मेरा शब्द उपयोग नहीं किया। खुद का पार्ट भी वे साक्षी होकर बजाती थीं। उन्हें भले बैठकर अधिक समय योग करने का समय नहीं मिलता था लेकिन उनका हर कर्म ही योगयुक्त था। कर्म में ही बाबा की याद समाई होने के कारण उनके हर कर्म महान व श्रेष्ठ थे। उनमें कर्तापन का भान बिल्कुल नहीं था। वे सदा स्वयं को निमित्त व बाबा को करनकरावनहार समझते थे। इस धारणा के कारण वे हर कर्म करते सहज न्यारे रहते थे। वे सदा सभी को साथ लेकर चलती थीं इसलिए सभी उनसे प्रसन्न व संतुष्ट रहते थे। वे हम सभी बहनों को अपनी सखी की तरह प्यार व सम्मान देती थीं। दादी सदा निष्पक्ष रहती थीं। वे कभी किसी पक्ष के प्रभाव में आकर निर्णय नहीं लेती थीं। बाबा की याद में रहने के कारण उनकी निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। उनके अथॉरिटी भरे बोल ऐसे होते थे जो हर आत्मा दिल से स्वीकार करती थी कि दादीजी ने कहा माना बाबा ने कहा और मुझे करना ही है। वे क्षमाशील थीं। दादीजी में लव एवं लॉ का सुंदर संतुलन था। दादीजी ने कभी स्वयं को प्रमुख न मानकर निमित्त समझ सेवा की ज़िम्मेवारी सम्भाली। दादी का मन बहुत ही निर्मल था, किसी का अवगुण उनके चित्त पर ठहरता नहीं था। दादीजी ने अपने ज्ञान व योग की ऊँची धारणाओं से सभी यज्ञवत्सों को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा। यह ईश्वरीय परिवार है। यह बाबा के कार्य को प्रत्यक्ष करने वाले विश्वसेवाधारी बच्चें है।

-ब्र.कु. संतोष,महाराष्ट्र व आंध्रप्रदेश की निदेशिका।

पवित्रता की मूरत थी दादी

शुरु से ही कोई भी सेवा हो, बाबा दादी को ही भेजते थे। कहीं से भी निमंत्रण आये, दादी को ही भेजा जाता था। आप सबको पता है कि पहले-पहले जापान से निमंत्रण आया। उसमें भी पहला पार्ट दादी जी का रहा। बाबा समान सबको पालना देना, सबकी बातें समाना, सबके ऊपर ध्यान देना, ये सब दादीजी करती थीं। मधुबन आने वालों के लिए ठीक प्रबंध करना, प्रबंध को देखना, यह सब दादी खुद करती थीं जैसे कि साकार बाबा स्वयं करते थे।

शुरु से ही हम देखते आये हैं कि दादीजी की प्योरिटी महान थी। हर प्रकार की प्योरिटी दादी जी में देखने में आती थी। किसी वस्तु, व्यक्ति, वैभव आदि में दादी जी की आँख कभी डूबी नहीं। जहां प्योरिटी होती है, वहां हर प्रकार की सिद्धि ऑटोमेटिक होती है। प्योरिटी हर गुण का बीज है। जहां प्योरिटी होती है वहां सर्व गुण अपने आप आते हैं। उस हिसाब से दादी जी में हर गुण और शक्तियां अपने आप समाये हुए थे। साथ-साथ बाबा में जो कार्य करने की विधि और कलाएं थीं वो भी आ गईं थीं। हम उन क्वालिटीज़ को देखते भी रहते थे और सीखते भी रहते थे।

-दादी रतनमोहिनी,संयुक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़।

परख शक्ति की धनी दादी प्रकाशमणि

साकार बाबा के अव्यक्त होने के बाद मुख्य प्रशासिका दादी जी से अधिक सम्पर्क रहा। एक बार की बात है, हम साठ टीचर्स बहनों का दादी, दीदी और मनोहर दादी के साथ हिस्ट्री हॉल में भोजन का प्रोग्राम था। रमणीकता की मूर्ति मनोहर दादीजी ने भोजन के पश्चात् दादी जी से कहा, दादी! आप इन बहनों की विशेषताओं को जानती हैं तो बताइये। दादी जी ने बिना समय लगाये लाइन से जैसे हम बैठे थे, वैसे ही बारी-बारी से एक-एक बहन की विशेषताएं सुनाईं। सोचने की बात है कि वैसे तो किसी एक की विशेषता सुनाने में सोचना पड़ता है, लेकिन दादी जी ने एकदम से तुरंत सभी की विशेषताएं सुना दीं। सत्यता की स्वर्ण आभा, परख शक्ति की धनी, दिलों की समीपता को गहराई से जानने वाली हमारी प्यारी दादी थीं। -ब्र.कु. पुष्पारानी,नागपुर विदर्भ क्षेत्र की निदेशिका।

निश्चिंत और निर्विघ्न रहने का वरदान मिला

एक बार मैं दादीजी के सिर पर बाम लगा रही थी, अचानक दादीजी ने कहा, देखो रानी! बाबा सामने खड़ा है। फिर थोड़ी देर बाद रुककर दादी जी ने कहा, सारे दिन में कोई समय ऐसा नहीं होता जो बाबा मेरे सामने ना हो। दादी जी के अनुभवों की गहराई से निकले बोल मेरे हृदय में समा गये और मैं भी सारा दिन बाबा को अपने सामने देखने के पुरुषार्थ में लग गई।

एक बार मैंने दादी से कहा कि मैं जहां सेवा पर हूँ वहां पर मैं जाना नहीं चाहती। दो दिन के बाद दादी ने बुलाया और पूछा, कितनी बहनें सेवा पर वहां समर्पित हैं? मैंने बताया लगभग बारह बहनें हैं। दादी जी ने कहा कि अपने कारण नहीं लेकिन उन बहनों के कारण आप वहां जाओ और निश्चिंत होकर सर्विस करो। दादी की इस आज्ञा का पालन कर मैं से-वास्थान पर पहुंच गई और सारे विघ्न दादी ने समाप्त कर दिए। आज तक निश्चिंत और निर्विघ्न रहने का वरदान जो मिला वह सदा साथ दे रहा है। दादी जी मदद करती रही हैं और कर रही हैं। -ब्र.कु. रानी,मुज़फ्फरपुर बिहार।